डॉ.पंडित बन्ने
डी.लिट्.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल)
तह – करमाला, जि. सोलापुर (महाराष्ट्र)

शोध–सारांश –

'भगवान बुद्ध और मानव कल्याण' में मोहम्मद इकबाल ने भगवान बुद्ध के विचार स्पष्ट किया है। भगवान बुद्ध ने भारत में व्याप्त हजारों वर्षों की अमानवीय के विरूद्ध वैज्ञानिक आधार पर ज्ञान, विज्ञान पर आधारित मानव कल्याण की व्यवस्था दी। ढाई हजार वर्ष पूर्व विज्ञान की बात सोचना भी मानवीय वैज्ञानिक चमत्कार ही है। अंधविश्वास को वैज्ञानिक आधार पर जांचना, परखना कई हजार वर्ष आगे समय के पार देखना है। मानवीय ज्ञान विज्ञान की पराकष्ठा हैं। बुद्ध ने खयं की विचारधारा शिक्षा, नीति, कार्यक्रम को ज्ञान, विज्ञान व तर्क के आधार पर स्थापित किया। बुद्ध के अनुसार उच्चतम ज्ञान के मार्ग पर चलने का अर्थ है कि मानसिक गुलामी से आजादी। जिस मानव को ज्ञान का प्रकाश मिलता है वह सदैव के लिए अंधविश्वास के अधंकार से निकालकर स्वयं प्रकाशमय हो जाता है। मानव जीवन में सत्य की प्राप्ति ही परम लक्ष्य की प्राप्ति है। व्यक्ति जो हजारों वर्षों से शोषित, पीड़ित, कमजोर, लाचर, बेबस है जो अन्याय, अत्याचार के अमानवीय बोझ को अपने कंधो पर सदियों से ठो रहा है। भगवान बुद्धने आम–आदमी के अंदर जो स्वयं शक्ति होती है उसे उभरकर संगाठित कर, उपयोग में लाने का लक्ष्य निर्धारित किया।

शब्द संकेत – अहिंसा, अंधविश्वास, शिक्षा, सहिष्णुता, मानव कल्याण, नैतिक मूल्य, अष्टांगिक मार्ग।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

अहिंसा अथवा जीव हिंसा न करना बुद्ध की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग है। संसार में मनुष्य का जीवन कभी उद्देशविहीन नहीं रहा, वह हर क्षेत्र में अपनी कार्यकुशलता का परिचय देता आया है। आज के आपाधापी युग में मनुष्य, मनुष्य का दुश्मन नजर आ रहा है। करूणा मैत्री विलुप्त है। मनुष्य का उद्देश्य सिर्फ उसका स्वार्थ रह गया है।

संसार में मनुष्य को कई विकारों ने घेर रहा है। यह विकास मनुष्य के कठोर शत्रु हैं। जैसे–राग, द्वेप, मोह, लालसा, तृष्णा, आलसय, काम, क्रोध, हिंसा, शत्रूता जैसे विकारों का संसार में जाल फैला है। इन विकारों पर विजय पाना ही सबसे सुखद जीत है। उन्होंने मनुष्य को शांत, सरल और करूणामयी जीवन में रहने की सीख दी है। मानव की सेवा भारतीय संस्कृति का दर्शन है और मूल दर्शन है सामाजिक समरसता। आज हम उन्मेश, उत्कर्ष और परमानदी संस्कृति को भूल चुके हैं। हमें तनाव रूपी जीवन शैली की जगह परस्पर त्योहारिक और साम्य शैली जीना चाहिए। हमें मर्यादा के अंदर ही रहना चाहिए एक भी कदम मर्यादा के बाहर नहीं रखना चाहिए।

'बुद्ध धम्म चक्क की खोज' में नानव चंद्र ने बुद्ध मानव कल्याण के लिए कार्य किया है स्पष्ट किया है। आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। पारिवारिक रिश्तों में तनाव बढ़ रहा है। बुद्ध एवं कमजोर वर्गों के प्रति उपेक्षा भाव बढ़ रहा है। आज परस्पर प्रेम व सहिष्णुता की महत्वा आवश्यकता है। बुद्ध मार्ग पर चल कर देश की विषमतावादी भेदभाव पूर्ण व्यवस्था का परित्याग कर पारस्परिक घृणा द्वेष व मनोमालिन्य त्यागकर समता, समानता करूणा, सहिष्णुता, दया, क्षमा व मैत्री अपने हदयों में समाहित कर एक अच्छे सदृढ़ समाज व राष्ट्र की आधारशिला रखें।

भगवान बुद्ध ने संपूर्ण जगत में मानव को पीड़ा से मुक्ति एवं प्रेम, सुख एवं शांति पर्वक जीवनायापन करने का उपदेश दिया है। 'बौध्द धर्म का स्वरूप' में पूजा पाल ने बौध्द धर्म का महत्व एवं स्वरूप किया है। भगवान बुद्ध ने अपना सर्वोत्तम ज्ञान सारे संसार को दान किया। समता, शांति

Copyright © 2020 Authors

करूणामय बंधुत्वभाव के नैतिक मूल्य मानव समाज के लिए प्रेरित है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में साधना का अपना एक विशेष स्थान है।

भगवान बुद्ध ने अपना मध्यम, मार्ग के रूप में प्रतिपादित किया है। ''संक्षेप में माध्यम मार्ग के रूप में दो अंतो कामसुखों के सेवन का त्याग, आत्मपीड़ा वाली तपस्या का त्याग एवं मध्यम मार्ग के रूप में आर्य अष्टांगिक मार्ग का सेवन आता है। मध्यम संख्या एवं मध्यम आकार वाले 152 सुतों के संग्रह मज्झिम–निकाय में भी बुद्धि पाँच इंद्रियों, पाँच वलों, सात बोज्झंगो, अष्टांगिक मार्ग, आठ विमोक्ख, आठ अभिआयतन, दस कंसिण, बीस सजा, छः अनुस्सति और चार सति–––––।''[1] बौध धर्म सभी मानव जाति व पशु–पक्षियों के लिए समान रूप से हितकारी है।

'भारतीय समाज में बौध्द धर्म का योगदान' एन्ट्री शास्त्री ने अपने लेख में समाज में बौध्द धर्म का योगदान का महत्व स्पष्ट किया है। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध थे। इनके उपदेश जनोपयोगी सर्वग्राह है। बौध्द धर्म का मूल मंत्र या कि संसार दुःख से पूर्ण है। इसके त्याग से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। उन्होंने जीवन और जगत को स्वीकार करके यह समस्या उत्पन्न नहीं की कि मनुष्य अमर है या नश्वर है। जीवन और शरीर एक है या अलग है या नश्वर है जीव और शरीर एक है या अलग अर्थात् मृत्यु के बाद वह बना रहता है या उसके साथ नष्ट हो जाना है। मनुष्य को सांसारिक कष्ट से मुक्त से कराना ही उनके धर्म का लक्ष्य था। अच्छे बुरे की पहचान करना तथा दूसरे को पीड़ा न पहुचाना। ऐसे कार्य करने को वे सही मानते थे जिससे सब सुखी हो। उनके दृष्टिकोण में यही सबसे बड़ा मानव धर्म था। ''भारतीय जीवन दर्शन में मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का अंतिम लक्ष्य माना गया था और ज्ञान अर्थात् शिक्षा को मोक्ष प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया था। इसी कारण आरंभ से ही बौध्द भिक्षु–भिक्षुणिओं की शिक्षा पर विशेष जो दिया गया था। शिक्षा का वैयक्तिक एवं सामाजिक उन्नयन में महत्वपूर्ण स्थान है। ––– बौद्ध धर्म के उद्य के पश्चात् बौध्द विहारों में सार्वजनिक शिक्षण संस्थाओं का उदय हुआ। ––– सम्राट अशोक के काल में तो बौध्द विहारों की बहुत उन्नति हुई थी।''[2] बौध्द विहारों का रूप संघात्मक था। जब ये विहार शिक्षण संस्थाओं के रूप में बदल गए तो इनका स्वरूप भी सामाजिक शिक्षण संस्थाओं का हो

 Copyright © 2020 Authors

गया। जिस समय बौध्द धर्म उन्नति के शिखर पर था, देश के कोने–कोने में बौध्द विहारों का जाल बिछा हुआ था और दम विहारों में उच्च शिक्षा दी जाती थी। विहारों का प्रबेध बौध्द करते थे।

बौध्द धर्म जीवन–यापन की सरल प्रणाली पर आधारित था। यह जाति–पाति के विरोधी तथा समानता की भावना वे ओत–प्रोत था। बुद्ध ने बौद्धिक स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया। 'स्ववं के लिए दीपक बनो' उनका मूलमंत्र था। बुद्ध की मान्यता थी कि हर चीज का परीक्षण और पुर्नपरीक्षण होना चाहिए, क्योंकि हर चीज में गलती की सभावना रहती है। प्रो. आर.एस. राधवाचार्य के अनुसार– ''भगवान बुद्ध के जीवन काल के ठीक पहले का समय भारतीय इतिहास का सर्वाधिक अंधकार गय युग था। उस समय का विचार धर्मग्रंथो के प्रति अंधभक्ति से बंधा हुआ था। नैतिकता की दृष्टि से भी यह पूर्ण अंधकारपूर्ण युग था। उस समय का विचार धर्मग्रंथो के प्रति अंधभक्ति से बंधा हुआ है। नैतिकता की दृष्टि से भी यह पूर्ण अंधकारपूर्ण युग था। हिंदुओं के लिये नैतिकता का अर्थ धर्म ग्रंयों के अनुसार यद्यपि धार्मिक अनुष्ठात को ठीक–ठीक करना था।''

बौध्द धर्म विद्या की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया है। अविद्या तथा तृष्णा को मोक्ष प्राप्ति की असफलता का कारण बताया है। संसार में दुश्चरित्रता से अधिक मूर्खता और अंधविश्वास ही दुःख का कारण है, भगवान बुद्ध ने इन्हें दूर रखा। बुद्ध ने जीवन की तीन पवित्रताएँ बताई। जैसे – 1. शारीरिक पवित्रता 2. वाणी की पवित्रता 3. मानसिक पवित्रता .

गुलाबचंद्र नारासा ने 'भगवान बुद्ध के विचार' में बुद्ध के विचार स्पष्ट है। बुद्ध बार–बार समझाते थे लोभ, द्वेष और मोह पाप के मूल है, इन्हें त्यागों बुद्ध कहते थे, क्रोध करनेवाले पर क्रोध करता है, उसे अहित होता है।

गौतम बुद्ध विहार के सभागार में बैठे हुए थे वहाँ एक घुमक्कड़ परिवार आया और यह कहने लगा– ''भगवान मैं अज्ञानी हूँ। धर्मकर्म के बारे में नहीं जानता। मेरे पास न बुद्धि है, न चातुर्य, न चातुर्य, न शब्द शैली है, मैं आपसे कोई प्रश्न अथवा जिज्ञासा कर सकने में भी असमर्थ हूँ यदि आप मुझे अपना शिष्य बनाकर मुझे धर्मापदेश देकर मेर लौकिक जीवन का सुधार करें तो मैं आपका आजन्म ऋणी रहूँगा।''

 Copyright © 2020 Authors

एक आदमी ने भगवान बुद्ध मे पूछा – ''जीवन मूल्य क्या है। बुद्ध ने उसे एक पत्थर दिया और कहा जो और इस पत्थर का मूल्य पता करके आ, लेकिन ध्यान रखना पत्थर को बेचना नहीं।''[3]

वह आदमी पत्थर को बाजार मे एक संतरे वाले का पास लेकर गया और बोला इसकी कीमत क्या है ? संतरेवाला चमकिले पत्थर को देखर बोला 12 संतरे ले जा और इसे मुझे दे जा।

आगे एक सब्जी वाले ने उस चमकीले पत्थर को देखा और को देखा और कहा एक बोरी आलू ले जा और इस पत्थर को मेरे पास छोड़ जा।

आगे एक सोना बेचनेवाले के पास गया उसे पत्थर दिखाया सुनार उस चमकीले पत्थर को देखकर बोला 50 लाख में बेच दे उसने मनाकर दिया तो सुनार बोला, दो करोड में दर्द या बता इसकी कीमत जो मांगेगा वह दूँगा तुझे उस आदमी ने सुनार से कहा मेरे गुरू ने इसे बेचने से मना किया है।

आगे हीरे बेचनेवाले एक व्यापारी के पास गया उसे पत्थर दिखाया व्यापारी ने कहाँ से लाया है ये बेशकीमती रूबी ? सारी कायनात सारी दुनिया को बेचकर भी इसकी कीमत नहीं लगई जा सकती ये तो बेसकीमती है।

वह आदमी हैरान होकर सीधे बुद्ध के पास आया, अपनी आप बीती बताई और बोलद्र अन बताओं भगवान मानवीय जीवनमूल्य क्या है ?

''बुद्ध बोले संतरेवाले को दिखाया उसने इसकी कीमत 12 संतरे की बताई, सब्जीवाले पास गया उसने इसकी एक बोवी आलूबताई, आगे सुनार वे दो करोड़ बताई एक हीरा व्यापारी ने इसे बेशकीमती बताया अब ऐसा ही मानवीय मूल्य है। तू बेशक हीरा है लेकिन सामनेवाला तेरी कींमत अपली औकात–अपनी जानकारी प्रति हैसियत से लगाएगा मिल जायेंगे।''[4] (बोधिसत्व बाबासाहेब टुडे – सं. ज्ञानप्रकाश जखमी, जनवरी, 2020 पृ. 15–16)

गौतम बुद्ध ने सदा विचार और सद्व्यवहार से जी ने की शिक्षा दी है। बुद्ध के सदाचार की शिक्षा को बहुजन समाज के लोग परिवार में फैलाएँ, समाज में फैलाएँ। भगवान बुद्ध के अनुसार धर्म –

1. जीवन की पवित्रता बनाये रखना ही धर्म है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

2. जीवन में पूर्णता प्राप्त करना ही धर्म है।
3. निर्वाण प्राप्त करना ही धर्म है।
4. तृष्णा का त्याग ही धर्म है।
5. यह मानना कि सभी संस्कार अनित्य है – धर्म है।
6. कर्म को मानव जीवन के नैतिक संस्थान का आधार मानता धर्म है।

पश्चिमी देशों में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता के पाँच प्रमुख कारण है –

1. बौध्द धर्म नैतिकता पर आधारित है।
2. बौध्द धर्म वैज्ञनिक और तर्क पूर्ण है।
3. बौध्द धर्म को मानने के लिए आस्तिक होना जरूरी नहीं है।
4. बौद्ध धर्म में ध्यान पर अधिक जोर है।
5. बौध्द धर्म किसी जाति विशेष का धर्म नहीं है यह मानव का धर्म है।''[5]

(बोधिसत्व बाबासाहब टुडे – सं. ज्ञानप्रकाश जखमी, नवबंर, दिसंबर, जनवरी, 2016,पृ. 31)

बुद्ध के अनुसार सदाचार –

1. जीव हिंसा न करना।
2. चोरी न करना।
3. काम–भोग संबधी मिथ्याचरण न करना।
4. झूठ न बोलना।
5. कठोर न बोलना।
6. चुगली न खाना।
7. व्यर्थ न बोलना।
8. लेन न करना।
9. द्वेष न करना।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

10. सम्यक दृष्टि।

भगवान बुद्ध कहते हैं – ''जो धर्म का सही अर्थ नहीं समझता, वह अल्प ज्ञान की प्राप्ति से अपने को बड़ा समझने लगता है। भगवान बुद्ध का धर्म समता पर आधारित था, भगवान बुद्ध का कहना था कि संसार में दुःख ही दुःख है और इसका कारण है सांसारिक चीजों के लिए तृष्णा। अष्ठालिंग मार्ग पर चलकर मनुष्य तृष्णा से छुटकारा पा सकता है। इन आठ प्रकार के आचार–विचार पर चलकर मनुष्य सदाचारी बन सकता है। बुद्ध ने अहिंसा के महत्व पर बल दिया है।''[6]

बौद्ध शिक्षण पद्धति का आरंभ स्वयं क महात्मा बुद्ध ने किया था। बौद्ध शिक्षा पध्दति में सत्य, दार्शनिक तथ्य, तर्क, पर्यवेक्षण, मनव आदि पर बल दिया गया था। उपासक को विनय और धर्म की शिक्षा दी जाती थी। तीनों पिटकों सुत, धम्म और विनय के विद्यार्थी एक साथ रहते थे। भिक्षु सत्तपिटक का पाठ करते थे। विनय का विमर्श करते थे तथा धम्म का पर्यालोचन करते थे जिससे उनके ज्ञान की वृद्धि होती थी।

बौध्द शिक्षा पध्दति ने न केवल भारत अपितु विश्व के विभिन्न देशों को अहिंसा, शांति, बंधुत्व एवं सहअस्तित्व का आदर्श दिया है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत का सांस्कृतिक संपर्क विश्व के विभिन्न देशों के साथ स्थापित हुआ। बौद्ध धर्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन भारतीय कला एवं स्थापत्य के विकास में रही है।

भगवान बुद्ध के समकालीन पुण्यकाश्यप, मंखलीगोशाल, अजितके शकम्बल, पकुधकच्चायन संजय वेलढीलपुत्र, निंगठनाथ के अनुयादिओं में ज्यादात्तर ने भगवान बुद्ध के मार्ग को चयन किया। भगवान बुद्ध की वाणी अनुठी है। भगवान बुद्ध का अष्ठागिंक मार्ग – 1. सम्यक दृष्टि 2. सम्यक संकल्प 3. सम्यक वाणी 4. सम्यक कर्मान्त 5. सम्यक आजीविका 6. सम्यक व्यायाम 7. सम्यक स्मृति 8. सम्यक समाधि आदि।

बुद्ध के अंतिम वचन – 'अत्तदीपोभव' अपने दीये स्वयं बनाना और तुम्हारी रोशनी में जो तुम्हे दिखाई पड़ेगा वह आस्था सहज होगी।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

संदर्भ ग्रंथ –

1. बोधिसत्व बाबासाहब टुडे – सं. ज्ञानप्रकाश जखमी, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर, 2016, पृ. 21

2. वही, पृ. 23

3. वही, पृ. 24

4. वही, पृ. 15 जनवरी, 2020

5. वही, पृ. 15

6. वही, पृ. 38, नवंबर 2018 से अप्रैल, 2019 तक।

Copyright © 2020 Authors